अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) प्रतिक्रमण का मूल नाम है-
(क) आवश्यक (ख) सामायिक
(ग) चउवीसत्व (घ) वंदना (क)

(b) पाँचवें स्थूल के कितने अतिचार हैं-
(क) 6 (ख) 5
(ग) 7 (घ) 14 (ख)

(c) आठवाँ पापस्थान है-
(क) लोभ (ख) मान
(ग) माया (घ) क्रोध (ग)

(d) 'पयहीणं' शब्द का अर्थ है-
(क) पद को कम करके (ख) अक्षर कम करके
(ग) अक्षर बढ़ा करके (घ) विनयरहित पढ़कर के (क)

(e) प्रतिक्रमण की अनुज्ञा लेने का पाठ है-
(क) इच्छामि णं भंते (ख) इच्छामि ठाइउं
(ग) आगम तिविहे (घ) अठारह पापस्थान (क)

(f) आलम्बन का भेद नहीं है-
(क) ज्ञान (ख) दर्शन
(ग) चारित्र (घ) यतना (घ)

(g) एषणा समिति में कितने दोष टालकर भिक्षा ली जाती है-
(क) 40 (ख) 42
(ग) 52 (घ) 25 (ख)

(h) गृहस्थ एवं साधु को लगने वाला दोष है-
(क) पिहिय (ख) माणे
(ग) माया (घ) विज्जा (क)

(i) अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर थे-
(क) भगवान ऋषभदेव (ख) भगवान अजितनाथ
(ग) भगवान शांतिनाथ (घ) भगवान महावीर (क)

(j) भगवान शांतिनाथ के धर्मपरिवार में श्राविकाएँ थीं-
(क) 62,000 (ख) 61,000
(ग) 3,93,000 (घ) 2,90,000 (ग)

(k) मुँहपत्ती की चौड़ाई होती है-
(क) इक्कीस अंगुल (ख) सौलह अंगुल
(ग) बत्तीस अंगुल (घ) पन्द्रह अंगुल (ख)

(l) सांसारिक लोगों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है-
(क) टी.वी. (ख) मोबाईल
(ग) घूमना (घ) कम्प्यूटर (ख)

(m) 'सुपात्रदान' से बंध होता है-
(क) मनुष्यगति का (ख) नरकगति का
(ग) तीर्थंकर गोत्र का (घ) तिर्यंच गति का (ग)

(n) ‘सुपात्रदान’ के लिए शुद्धता आवश्यक है-
(क)चित्त (ख) वित्त
(ग) पात्र (घ) तीनों ही (घ)

(o) मंगलपाठ सुनने का लाभ नहीं है-
(क) पवित्रता (ख) शांति
(ग) निर्मलता (घ) प्रतिकूलता (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर ‘हाँ’ अथवा ‘नहीं’ में दीजिए :- 15x1 = (15)

(a) प्रत्याख्यान छठा आवश्यक है। (हाँ)
(b) ‘कंखा’ दर्शन का एक अतिचार है। (हाँ)
(c) ‘संलेखना’ के 99 अतिचार हैं। (नहीं)
(d) विवर्जन का अर्थ त्याग होता है। (हाँ)
(e) सुदेव, सुगुरु, सुधर्म रूप सम्यक्त्व मोक्ष का मार्ग है। (हाँ)
(f) ‘अनुप्रेक्षा’ स्वाध्याय का एक भेद है। (हाँ)
(g) निरवद्य वचन बोलने की प्रवृत्ति को ‘ईर्या समिति’ कहते हैं। (नहीं)
(h) वचन गुप्ति चार प्रकार की होती है। (हाँ)
(i) साधु के आहार छोड़ने के छह कारण हैं। (हाँ)
(j) माता मरुदेवी ने प्रथम स्वप्न गज का देखा था। (नहीं)
(k) आर्य शय्यंभव ने ‘दशवैकालिक सूत्र’ की रचना की। (हाँ)
(l) मुँहपत्ती का एक प्रयोजन ‘यतना’ है। (हाँ)
(m) मुँहपत्ती से अविवेक बुद्धि जागृत होती है। (नहीं)
(n) साधु-सन्तों के चरण-स्पर्श करते समय मोबाईल दूर रखना चाहिए। (हाँ)
(o) ‘दान’ श्रावक के जीवन का प्रधान गुण है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	अणिच्छियव्वो	(क) 15	असावगपाउग्गो
(b)	भात-पानी विच्छेद	(ख) वचन का दोष	प्राणातिपात विरमण
(c)	कर्मादान	(ग) असावगपाउग्गो	15
(d)	ज्ञान के अतिचार	(घ) औघिक	14
(e)	मौखर्य	(च) 14	वचन का दोष
(f)	कीय	(छ) विकाल वेला	उद्‌गम दोष
(g)	उपधि	(ज) इक्ष्वाकु वंश	औघिक
(h)	भगवान ऋषभदेव	(झ) राजा मेघरथ	इक्ष्वाकु वंश
(i)	कबूतर रक्षा	(य) प्राणातिपात विरमण	राजा मेघरथ
(j)	दशवैकालिक सूत्र	(र) उद्‌गम दोष	विकाल वेला

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a) मेरे द्वारा साधु-साध्वीजी की संयम-समाधि की पृच्छा कर क्षमायाचना की जाती है। इच्छामि खमा समणो का पाठ
(b) मैं शरीर को कृश करने का तप कहलाता हूँ। संलेखना
(c) मैं ग्यारहवाँ पापस्थान हूँ। द्वेष
(d) मैं प्रतिक्रमण का सारांश पाठ हूँ। इच्छामि ठाइउं का पाठ
(e) मैं समिति का चौथा भेद हूँ। आदान भाण्ड निक्षेपणा समिति
(f) मैं ऐसा दोष हूँ, जो साधु के निमित्त उधार लाकर देने पर लगता हूँ। पामिच्चे दोष
(g) मैं मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना कहलाता हूँ। मनो गुप्ति

(h)	मैं भगवान ऋषभदेव का अन्य नाम हूँ।	भगवान आदिनाथ
(i)	मुझे केवलज्ञान की प्राप्ति पौष शुक्ला नवमी को हुई।	भगवान शान्तिनाथ
(j)	मैं शय्यंभव भट्ट का पुत्र हूँ।	मणक
(k)	वायुकाय के जीवों से बचने के लिए मेरा उपयोग किया जाता है।	मुँहपत्ती
(l)	मैं वैचारिक संप्रेषण का सशक्त एवं सस्ता साधन हूँ।	मोबाईल
(m)	मैं मोक्ष प्राप्ति का एक अमोघ उपाय हूँ।	सुपात्रदान
(n)	मैं अक्षय सुख देने एवं दुःख हरने का पाठ हूँ।	मांगलिक का पाठ
(o)	मैं साधु-सन्तों से बातचीत करने पर काम आता हूँ।	भाषा व्यवहार

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य क्या है ?

ज्ञान, दर्शन,चारित्राचारित्र व तप पर लगे अतिचारों की शुद्धि करना ही प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य है।

(b) इच्छामि खमा-समणो का अन्य नाम क्या है ?

द्वादशावर्त सूत्र

(c) तप के दो अतिचार लिखिए।

नोटः- इनमें से कोई दो मान्य-

1. इस लोक के सुख की कामना की हो।
2. परलोक के सुख की कामना की हो।
3. जीवित रहने की कामना की हो।
4. मरने की कामना की हो।
5. कामभोग की कामना की हो।

(d) किस सूत्र में समिति और गुप्ति के अधिकार का उल्लेख किया गया है ?

श्री उत्तराध्ययन सूत्र के चौबीसवें अध्ययन में।

(e) औपग्रहिक उपधि को परिभाषित कीजिए।

प्रातिहारिक उपधि जो गृहस्थ से पाट-पाटलादि कारण से लेवे, भोगे एवं कार्य होने के बाद वापस लौटावे।

(f) साधुजी को नित वंदना करने का एक लाभ लिखिए।

नीच गोत्र की प्राप्ति नहीं होती और ऋद्धि-समृद्धि बढ़ जाती है।

(g) राजा महेन्द्र ने अंजना का विवाह किससे कराया ?

पवनंजय से

(h) ''घर-घर......................कोई रे।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

घर-घर तेरा नाम जपाऊँ , तेरी महिमा सबको सुनाऊँ।

तेरे जैसा प्यार जताया नहीं कोई रे.................।।

(i) मोबाईल के दो नुकसान लिखिए।

नोटः-इनमें से कोई दो मान्य-

1. वाहन चलाते समय मोबाईल पर बात करने से दुर्घटनाएँ बढ़ी हैं।
2. मोबाईल के कारण लोगों की झूठ बोलने की आदत बढ़ी है।
3. मोबाईल की बैटरी सचित्त होने से जीव हिंसा/विराधना या अग्निकाय का दोष लगता है जो कि आध्यात्मिक दृष्टि से कर्मबंध का हेतु है।
4. मोबाईल से मन की शान्ति, चित्त की एकाग्रता तथा विचारों की स्थिरता समाप्त हो जाती है।
5. मोबाईल फोन से निकलने वाली रेडियों तरंगों से मस्तिष्क के केंसर, चिड़चिड़ापन व बहरापन का खतरा बढ़ा है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) आगमे तिविहे के पाठ का प्रयोजन (उद्देश्य) लिखिए।
यह ज्ञान के अतिचारों के प्रतिक्रमण का पाठ है। आगम या शास्त्र के पठन-पाठन में लगे अतिचारों जैसे-पाठ के क्रम का आगे-पीछे होना, हीन अक्षर, योग रहित, विनय रहित, अकाल में पठन आदि अतिचारों की आलोचना कर दुष्कृत हो, ऐसी प्रार्थना की गई है।

(b) कर्मादान किसे कहते हैं ?अंतिम चार कर्मादानों के नाम लिखिए।
जो श्रावक-श्राविकाओं के जानने योग्य है, किन्तु आचरण करने योग्य नहीं हैं। उन्हें कर्मादान कहते हैं। अंतिम चार कर्मादान-1. निलंछण कम्मे, 2.दवग्गि-दावणया, 3. सर-दह-तलाय सोसणया, 4. असई-जण-पोसणया।

(c) साधु के आहार छोड़ने के छह कारण लिखिए।
1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर। 2. देवता, मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग उत्पन्न होने पर।
3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए। 4. प्राणियों की रक्षा के लिए।
5. तपस्या करने के लिये। 6. शरीर का त्याग करने के लिए।

(d) ''एकवचन.......................प्राणी।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
एक वचन श्री सतगुरु केरो, जो पैठे दिल माँय रे प्राणी।
नरक निगोद में ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी।।

(e) महासती अंजना के जीवन से मिलने वाली तीन शिक्षाएँ लिखिए।
नोटः-इनमें से कोई तीन मान्य-
1. विपत्ति में भी धैर्य बनाये रखें।
2. प्राण देकर भी शील-धर्म की रक्षा करें।
3. अपनी संतानों को सुसंस्कारी बनायें।
4. जीवन में सुख-दुःख स्वकृत कर्मों से मिलते हैं, अतः कर्म-बंधन में सजगता रखे।

(f) ''जब से.................कोई रे।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
जब से मैंने तुमको ध्याया, तूने मुझको अपना बनाया।
तेरा जैसा लाड लडाया नहीं कोई रे।।

(g) मुँहपत्ती के भगवती सूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र में क्या प्रमाण दिए हैं ? उल्लेख कीजिए।
1. भगवती सूत्र 16वें शतक के दूसरे उद्देशक में भगवान ने बिना यतना (मुहँपत्ती) के इन्द्र महाराज की भाषा को सावद्य बताया।
2. उत्तराध्ययन सूत्र के 26वें अध्ययन में आया है-''मुँहपोत्तिं पडिलेहित्ता।'' अर्थात् मुँहपत्ती का प्रतिलेखना करने की बात कही गई है।

(h) सुपात्रदान देते समय ध्यान रखने योग्य कोई तीन बिन्दुओं का उल्लेख कीजिए।
नोटः- इनमें से कोई तीन बिन्दु मान्य-
1. गोचरी के समय घर का दरवाजा खुला रखें।
2. गोचरी के समय असूझता करने वाली वस्तुओं जैसे-टेलिफोन, मोबाईल, टी.वी., सचित्तपानी, हरी-लिलोती एवं सैल वाली घड़ी आदि से दूर रहे।
3. घर में संत-सतियाँजी पधारे, तब जो असूझते होवे तो कुछ नहीं बोलें।
4. असूझता व्यक्ति बहराने एवं दरवाजा खोलने के लिए आगे न बढ़े।
5. घर में असणं, पाणं, खाइमं, साइमं आदि चौदह प्रकार की वस्तुएँ सूझती रखें।
6. संत-सती पधारने पर उन्हें उत्कृष्ट भाव से शान्तिपूर्वक नीचे बैठकर बहराएँ।
7. संत-सतियाँजी पधारे तब जो वस्तु निर्दोष हो, उसे ही बहराने का लाभ लेवें।
8. संत-सतियाँजी पधारे तब उतावले होकर हड़बड़ी नही करें।
9. डाईनिंग टेबल पर कच्चा नमक, कच्चा पानी, फल, सलाद एवं नींबू आदि नहीं रखें।

10. भोजन करने से पूर्व भावना भाएँ कि हे प्रभो। मेरे घर साधु-साध्वी पधारे तो मैं आहार पानी बहराकर महान लाभ प्राप्त करुँ।

11. साधु-साध्वी जी के साथ जाकर अन्य घरों से भी गोचरी कराने का लक्ष्य रखें।

12. साधु-साध्वी जितना आहार देने को कहे, उतना ही देवें, जबरदस्ती नहीं करें।

13. गोचरी के समय साधु-साध्वियों से अनावश्यक एवं अनर्गल बातें नहीं करें।

(i) निम्न कथनों का भाषा व्यवहार (साधु-संतों से बातचीत) लिखिए-

(1)म.सा. आप कैसे हैं ?	-	म.सा. आपके साता है ?
(2) हमे याद करते रहना।	-	हम पर भी अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखना।
(3)म.सा. भाषण दे रहे हैं।	-	म.सा. प्रवचन फरमा रहे हैं।